https://www.echetana.com/Vol.-11, No.-01, Jan.-Mar. 2026, pp. 30-32

CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

सोशल मीडिया –भारतीय संस्कृति पर पाष्चात्य प्रभाव के कारण

इन्द्रा कुमारी
सहायक आचार्य (विधा सम्बल)
हिन्दी विभाग
पण्डित दीनदयाल उपाध्याय षेखावाटी विष्वविधालय,सीकर
Email:-indubadasara@gmail.com, Mobile-8209278471

……………………………………………………………………….
First draft received: 07.01.2026, Reviewed: 19.01.2026
Final proof received: 21.01.2026, Accepted: 25.01.2026

शोध सारांश

*संस्कृति का क्षेत्र सभ्यता से कहीं अधिक व्यापक और गहन होता है। अर्थात संस्कृति एवं सभ्यता के क्रियाकलाप अलग है परन्तु दोनों परस्पर जुड़े हुए भी हैं। सभ्यता में मनुष्य के राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, प्रौद्योगिकी व दृश्य कला रूपों का प्रदर्शन होता है जो जीवन को सुखमय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। जबकि संस्कृति में कला, विज्ञान, संगीत, नृत्य और मानव जीवन की उच्चतर उपलब्धियाँ सम्मिलित है। अतः यही कहा जा सकता है कि–**'सभ्यता वह है जो हम बनाते है तथा संस्कृति वह है जो हम है।'***

मुख्य शब्द - *संस्कृति एवं सभ्यता, परम्परागत अस्तित्व*

प्रस्तावना

रूखी सूखी खाए के,

ठंडा पानी पीव।

देख पराई चूपड़ी,

मत ललचाये जीव।।

इसी सूक्ति को चरितार्थ करने वाली भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता मानी जाती है। इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है। जीने की कला हो, विज्ञान हो या राजनीति हो सभी क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा है।

*आज विदेशों की संस्कृतियां तो समय की धारा के साथ – साथ कुछ इस प्रकार नष्ट हो रही है **'मानो हाथों से फिसलती हुई रेत'** किन्तु ,भारत की संस्कृति व सभ्यता आदिकाल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर – अमर बनी हुई है। किन्तु वर्त्तमान समय में इस बढ़ते सोशल मीडिया पाश्चात्य प्रभाव ने भारतीय संस्कृति को भी एक कटघरे में खड़ा कर दिया हैं, जो कि इसे पतन की ओर अग्रसर करता जा रहा है।*

संस्कृति का तात्पर्य एवं अर्थ

संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। अतः संस्कृति का साधारण अर्थ है – संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि, सजावट आदि।

आज के समय में सभ्यता और संस्कृति को एक – दूसरे का पर्याय समझा जाने लगा है जिसके फलस्वरूप संस्कृति के सन्दर्भ में अनेक भ्रांतियाँ पैदा हो गई है। लेकिन वास्तव में संस्कृति और सभ्यता अलग – अलग होती है।

संस्कृति का क्षेत्र सभ्यता से कहीं अधिक व्यापक और गहन होता है। अर्थात संस्कृति एवं सभ्यता के क्रियाकलाप अलग है परन्तु दोनों परस्पर जुड़े हुए भी हैं। सभ्यता में मनुष्य के राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, प्रौद्योगिकी व दृश्य कला रूपों का प्रदर्शन होता है जो जीवन को सुखमय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। जबकि संस्कृति में कला, विज्ञान, संगीत, नृत्य और मानव जीवन की उच्चतर उपलब्धियाँ सम्मिलित है। अतः यही कहा जा सकता है कि–'सभ्यता वह है जो हम बनाते है तथा संस्कृति वह है जो हम है।'

भारतीय संस्कृति का स्वरूप

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। यह माना जाता है कि भारतीय संस्कृति यूनान, रोम, सुमेर और चीन की संस्कृति के समान ही प्राचीन है। कई भारतीय विद्वान तो भारतीय संस्कृति को विश्व की सर्वाधिक प्राचीन मानते है।

वसुधैव कुटुम्बकम

हमारे विचारको की उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकमश के सिद्धान्त में गहरी आस्था रही है। वस्तुतः शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों का विकास ही संस्कृति की कसौटी रहा है। इस कसौटी पर भारतीय संस्कृति पूर्ण रूप से खरी उतरती है।

भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक व्यवस्थित रूप सर्वप्रथम वैदिक युग में प्राप्त होता है। वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ माने जाते है। प्रारम्भ से ही भारतीय संस्कृति अत्यन्त उदात्त, समन्वयवादी, सशक्त एवं जीवन्त रही है, जिसमें जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आध्यात्मिक प्रवृत्ति का अदभुत समन्वय पाया जाता है।

भारतीय विचारक प्राचीन समय से ही सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में मानते है। इसका कारण उनका उदार दृष्टिकोण है।

आश्रम व्यवस्था

आश्रम व्यवस्था का पालन करते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है।

प्राचीन भारत धर्म, दर्शनशास्त्र, राजनीति, समाजशास्त्र इत्यादि में भारतीय संस्कृति के सच्चे स्वरूप को देखा जा सकता है।

अतिथि देवो भवः

यह भारत की आत्मिक आवाज है जो इसकी संस्कृति की नींव है। भारतीय संस्कृति अपनों के साथ–साथ अतिथियों

को भी देवतुल्य समझती है।

ये सिद्धान्त किसी देश या जाति के लिए नहीं अपितु समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए है। इस दृष्टि से भारतीय संस्कृति को सच्चे अर्थ में मानव संस्कृति कहा जाता है।

अतिथि देवो भवः

सोशल मीडिया–पाश्चात्य प्रभाव एक परिचय

सोशल मीडिया एक अपरम्परागत मीडिया है। यह एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है जिसे इन्टरनेट के माध्यम से पहुँच बना सकते है। सोशल मीडिया एक विशाल नेटवर्क है जो कि सारे संसार में जाल रूपी फैला हुआ है। व्हाट्सअप, ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, स्नैपचैट आदि प्रमुख है।

वर्त्तमान समय में मीडिया की उपयोगिता महत्व एवं भूमिका निरन्तर बढ़ती जा रही है। कोई भी समाज, सरकार, वर्ग, संस्था, समूह, व्यक्ति मीडिया की उपेक्षा कर आगे नहीं बढ़ सकता। आज के जीवन में मीडिया एक अपरिहार्य आवश्यकता बन गया है।

मीडिया एक समग्र तंत्र है जिसमें प्रिंटिंग प्रेस, पत्रकार, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम, रेडियो, सिनेमा, इन्टरनेट आदि सूचना के माध्यम से सम्मिलित है। अगर समाज में मीडिया की भूमिका की बात करे तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि समाज में सोशल मीडिया प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से क्या योगदान दे रहा है एवं उसके उत्तरदायित्वों के निर्वहन के दौरान समाज पर उसका क्या सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

सोशल मीडिया– पाश्चात्य प्रभाव का बढ़ता प्रचलन

अन्तर्राष्ट्रीय उपभोक्ता कल्याण समिति दिल्ली की राष्ट्रीय कार्यकारिकी ने आज के समय में देश भर में सोशल मीडिया के दुरूपयोग पर चिन्ता व्यक्त करते हुए इस देश में सोशल मीडिया को लेकर उपभोक्ताओं में जागृति लाने का निर्णय किया है जो एक महत्वपूर्ण निर्णय है। सोशल मीडिया से तात्पर्य है सामाजिक संजाल स्थल`वबपंस छमजूवतापदह`पजमे जो कि आज इंटरनेट का अभिन्न अंग है जिसे विश्व में एक अरब से अधिक लोग उपयोग करते है। अकेले भारत में लगभग 350 मिलियन लोग सोशल मीडिया का उपयोग करते है। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2026 अंत तक यह आंकड़ा 500 मिलियन तक पहुंच जाएगा।

वर्ष 2023 में जारी एक रिपोर्ट के अनुसार भारत के लोग औसतन 3.5 घंटे सोशल मीडिया पर बिताते है। फिलिपिंस के लोग 5 घंटे और सबसे कम जापान के लोग औसतन 45 मिनट सोशल मीडिया का प्रयोग करते हैं परन्तु जिस प्रकार भारत में इसका प्रयोग बढ़ता जा रहा है तो वह दिन दूर नहीं जब हम इस क्षेत्र में प्रथम स्थान पर होंगे परन्तु वहां तक पहुंचने में हम क्या सब कुछ खो चुके होंगे इसका अनुमान लगाना संभव नहीं है।

सोशल मीडिया पाश्चात्य प्रभाव का भारतीय संस्कृति पर दुष्प्रभाव :–

विश्व में भारत को 'विश्व गुरू' के नाम से जाना जाता था। पश्चिमी देश भी भारत की संस्कृति को अपनाने को लालायित रहते थे। भारत के लोंगो का उठना बैठना, पहनावा, मान मर्यादा, शालीनता उनको अचम्भित करती थी। रिश्तों में मर्यादा भारतीय संस्कृति की देन है। लेकिन आज परिस्थितियाँ उलटती जा रही है। आज इस सोशल मीडिया के दुष्प्रभावों ने देश के जिगर को छलनी कर दिया है।

परिवारों का पृथक्करण

आज भारतीय संस्कृति की मूल विशेषता 'अनेकता में एकता' के कारण ही संयुक्त परिवार व्यस्थित स्वरूप में आचार – विचार पर पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव पड़ा। संयुक्त कुटुम्ब प्रथा के स्थान पर परिवारों का पृथक्करण होने लगा है। यह कहना सर्वथा उचित होगा कि –

सहजता भी थी सादगी और बंदगी भी थी

पर जब ये वाट्सअप और फेसबुक नहीं थी।।

इस सोशल मीडिया का बस इतना – सा प्रभाव है। पहले अभावों में खुशियां थी, किन्तु अब खुशियों का अभाव है। पड़ोसी है लेकिन उनका आभास खत्म हो गया, परिवार है लेकिन उनका अहसास खत्म हो गया।

धार्मिक साम्प्रदायिकता

हमारा देश भारत विभिन जाति सम्प्रदाय और धर्मों के ताने बाने में बुना विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है। अनेकता में एकता की विशेषता को ही सोशल मीडिया पर अधिक भड़काया जा रहा है। जाति, धर्म के नाम पर देश की अखण्डता को खंड – खंड किया जा रहा है। राजनैतिक दलों के द्वारा बनाए गए आई सी सेल पार्टी के राजनैतिक लाभ के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार है। धर्म और जाति के नाम पर फैलाई जा रही नफरत ने हमारे सामाजिक ताने – बाने को तार – तार कर के रखा दिया है। हमारी संस्कृति हमारी सभ्यता कर बात करने वालो को सोशल मीडिया पर पिछड़े हुए पुराने लोगों की सोच की तरह परोसा जा रहा है।

युवा पीढ़ी पर दुष्प्रभाव

आज के इस सोशल मीडिया का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव युवा पीढ़ी पर ही पड़ रहा है। आज के इस दौर में जब देश के युवा की जिम्मेदारी थी, अपने देश, अपने वतन, अपने राष्ट्र को आगे ले जाने की, वही युवा आज केवल 4ग4 इंच की छोटी सी स्क्रीन पर अपनी कोमल अंगुलियों के घर्षण मात्र से अपनी भावनाओं के इमोजी सेंड कर रहा है।

'चार बोतल वोदका, काम मेरा रोज का'

जैसी चंद पंक्तियों ने सोशल मीडिया पर हंगामा फैला रखा है जो कि भारत के भविष्य को तबाह करने पर उतारू हो रहा है।

आज देशभक्ति के नाम पर 15 अगस्त व 26 जनवरी पर लाखों युवा तिरंगे के साथ सेल्फी अपलोड कर देते है। पर क्या साल में दो बार तिरंगा हाथ में ले लेनादेशभक्ति है? नहीं, ये अनुकरण है जो खुद को दूसरो के मध्य लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से किया गया है।

आज युवा अपनी पहचान समाज में न बनाकर चन्द फॉलोवर्स को बढ़ाने के लिए सोशल साइट्स का प्रयोग करता है जो कि न केवल स्वयं युवा वर्ग के लिए चुनौतियों का पुल है बल्कि आने वाले समय में यह देश के लिए दीमक के समान नुकसानदायक है। यह हमारी संस्कृति, पहचान, अस्तित्व के लिए बेहद हानिकारक है।

अश्लीलता एवं महिला अत्याचार

आज समाज में बढ़ते महिला अत्याचार एवं अश्लीलता परोक्ष रूप से सोशल मीडिया एवं पाश्चात्य संस्कृति का ही प्रभाव है। पाश्चात्य प्रभाव के कारण आज का युवा वर्ग घंटो समय सोशल साइट्स पर चैटिंग में बिता देता है। बदलते दौर में वह इन सोशल मीडिया के माध्यम से अश्लील फिल्मे, वीडियो बनाकर उसे वायरल करने में लगा है।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'

भारतीय संस्कृति जिसमें एक औरत को देवी की तरह पूजा जाता है, इन अश्लील हरकतों की वजह से औरत की गरिमा को हानि पहुँचायी जा रही है। आज बलात्कार, साइबर क्राइम की सबसे पहली दस्तक सिर्फ और सिर्फ इन सोशल साइट्स के जरिए ही हो रही है।

अभद्र भाषा, अश्लीलता हमारी नौजवान पीढ़ी के जीवन में घोली जा रही है। पश्चिमी सभ्यता की ओर हमारी नयी पीढ़ी को धकेला जा रहा है। इस प्रकार से देखा जाए तो हमारी सामाजिक व्यवस्था पर पश्चिमी देश का कब्जा हो चुका है। आज भारतवासी ही हिन्दी, जो मातृभाषा है इसे छोड़ते हुए जा रहे है। देश में शिक्षा का स्तर कम है इसी के कारण सोशल नेटवर्किंग साईट से परोसी गई सामग्री का दुष्प्रभाव अधिक पड़ रहा है। अधिकांश लोग झूठी व सच्ची खबर के अंतर को नहीं जान पाते है।

शारीरिक दुष्प्रभाव

आज के समाज का प्रत्येक वर्ग चाहे वह बच्चा, युवा या बूढ़ा हो इस सोशल मीडिया पर समय व्यतीत कर रहा है। इसका दुष्प्रभाव उनके शरीर पर पड़ रहा है –

- आज बच्चों के मोबाइल पर सोशल साइट्स उपयोग में लेने के कारण उनकी आँखों की रोशनी निरन्तर कम हो रही है। एक शोध

के अनुसार बच्चों में इनके उपयोग से आँखों के टेढ़ी होने की संभावना भी बढ़ रही है।

- आज सोशल मीडिया का प्रयोग करने के लिए प्रत्येक कोई शारीरिक व्यायामकरने के लिए समय नहीं निकाल पाता है जिससे उसे मोटापा, गठिया जैसी समस्या के बढ़ने की संभावना बनी रहती है।
- आज इनदुष्प्रभावों को मध्यनजर रखते हुए यह कहना सही होगा कि –

बूढ़ी हो गयी नन्ही आँखे
आ गए चश्मों के दौर।
डिब्बे में बन्द है खेल –खिलौने
चुप है वो बचपन के शोर।।

- आज सोशल मीडिया में गेम्स, जुए की लत लगने के कारण वह अपने मानसिक संतुलन को खोने लगते है।
- आज सोशल मीडिया पर कुछ बच्चे अपरिपक्व होने के बावजूद भी ऐसी सामग्री का उपयोग कर लेते हैं जो उनकी परिपक्वता एवं मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है।
- रिश्तों में दूरियाँ

देखा जाए तो कमाल की बात है कि सोशल मीडिया पर अनजान लोगों से घंटो – घंटो तक बात कर लेते हैं, परन्तु अपने निजी करीबी लोगों को हम अपना दो पल भी नहीं देते हैं। आज रिश्तों में कड़वाहट इतनी बढ़ गयी है कि बच्चे अपने माता – पिता को वृद्धाश्रम तक छोड़ आते हैं। परन्तु भारतीय संस्कृति इसका समर्थन बिलकुल नहीं करती क्योंकि –

छत नहीं रहती, दहलीज नहीं रहती
दिवारों पर दर नहीं रहता
घर में बुजुर्ग ना हो तो
घर– घर नहीं रहता।

परन्तु आज सोशल मीडिया पर व्यक्ति इतना समय कर देता है कि उसके पास बुजुर्गों के लिए समय ही नहीं बचता है।

आज भारतीय संस्कृति में जो चरण स्पर्श के संस्कार थे वह भ्प और भ्मससव में सिमटने लगे है।

होली – दिवाली आदि त्योंहारो पर आपसी भाईचारे मेल जोल का आनन्द एक – दूसरे के घर जाकर उठाया जाता था वह आज सोशल मीडिया पर लगाई गई स्टोरी और स्टेटस ने छीन लिया है।

अगर ऐसा ही चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब मानव समाज में सामाजिकता की बजाय केवल अपने आप में ही सिमट कर रह जाएगा।

भारतीय संस्कृति के पतन को रोकने के उपाय

सोशल मीडिया के जरिए ऐसे कई विकासात्मक कार्य हुए है जिनसे कि लोकतंत्र को समृद्ध बनाने का काम हुआ है परन्तु इस सोशल मीडिया एवं पाश्चात्य प्रभाव के अनुकरण के कारण हम अपने वास्तविक अस्तित्व को खोते जा रहे है जो कि सही नहीं है –

- सोशल मीडिया की बजाय सामाजिक कार्यो को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- भारतीय संस्कृति के स्वरूप को वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर उभारा जाए।
- माता–पिता को बालकों में अपनी मातृभाषा, मातृभूमि, संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति मोह उत्पन्न करे।
- युवाओं एवं बालकों में भारतीय संस्कृति के आत्मिक भाव को विभोर करना चाहिए।
- 13 वर्ष से कम उम्र के बालकों को सोशल मीडिया का प्रयोग कम से कम एवं माता – पिता की निगरानी में ही किया जाना चाहिए।
- सोशल मीडिया पर प्रयोग होने वाली अश्लील सामग्री पर पूर्णतया प्रतिबन्ध लगया जाना चाहिए।

जीवन का उद्देश्य केवल लौकिक ज्ञान नहीं महाभारत, भागवद्गीता हैं।

उपसंहार

किसी बड़े प्रदेश मे कभी भी एक संस्कृति पूर्ण रूप से व्याप्त नहीं रही है परन्तु भारत में आध्यात्मिकता संस्कृति की प्रमुखता रही है। बदलाव प्रकृति का नियम है किन्तु हम आज आधुनिकता के नाम पर अपनी मूल शाखा से विच्छिन्न हो जाए यह सही नहीं है।

अगर हो गए सोशल मीडिया से दूर तुम
तो ख्वाब हकीकत पाओगें,
हो जाओ पाश्चात्य से दूर,
तो तुम सब कुछ करके दिखलाओगे।

अतः वर्तमान समय में आवश्यकता है हम देश के छलनी हुए जिगर को अपनी मूल संस्कृति, सभ्यता से मरहम लगाए।

आओं ऐसे सोशल मीडिया से दूर हो चले
जिसमें भारतीय संस्कृति ही ना मिले
क्या धरा है पाश्चात्य प्रभाव में
जब एक अपना ही अपनों को ना मिले।

सन्दर्भ सूची

- कुमार,आशीष।(2020) सोशल मीडिया और निजताः एक विश्लेषण, सामाजिक अध्ययन जर्नल ।
- जैन,प्रिया।(2020)सोशल मीडिया और निजता के अधिकार,मनोरंजन और मीडिया ।
- चोपडा, संगीता।(2020)सोशल मीडिया का सामाजिक प्रभाव : निजता और पहचान के मुद्दे, समाजशास्त्र पत्रिका ।
- गुप्ता, रेखा।(2021)सोशल मीडिया और निजताः चुनौतियाँ और समाधान,मीडिया और समाज।
- रस्तोगी, पंकज।(2021)निजता और सोशल मीडियाः एक विश्लेषण,सामाजिक परिवर्तन।
- नायर,सुमित्रा।(2023) डिजिटल दुनिया और सामाजिक पहचान,सामाजिक अध्ययन जर्नल